राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–pr.rajbhavan@gmail.com
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

राजभवन में 'प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध–संस्थान, वैशाली' की अधिष्ठात्री परिषद् की बैठक आयोजित हुई

पटना, 28 जून 2019

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन की अध्यक्षता में आज राजभवन सभाकक्ष में प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली की अधिष्ठात्री परिषद् की बैठक आयोजित की गई, जिसमें अपर मुख्य सचिव (शिक्षा विभाग) श्री आर॰के॰ महाजन, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह, बी॰आर॰ए॰बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के प्रतिकुलपति डॉ॰ आर॰के॰ मंडल, जिला पदाधिकारी, मुजफ्फरपुर श्री आलोक रंजन घोष, जिला पदाधिकारी, वैशाली श्री राजीव रौशन सहित वित्त, शिक्षा, वन–पर्यावरण, राज्यपाल सचिवालय आदि के वरीय अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि संपूर्ण जैन साहित्य तथा प्राकृत, पालि, संस्कृत आदि भाषाओं में संकलित जैन धर्म–दर्शन की महत्वपूर्ण ज्ञान–संपदा को संचित किया जाना बेहद जरूरी है।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि जैन–साहित्य सत्य, अहिंसा, करूणा, प्रेम आदि का संदेश देने के साथ–साथ प्रकृति के साथ मनुष्य की अंतरंगता को महत्वपूर्ण मानते हुए पर्यावरण–संतुलन कायम रखने की प्रेरणा देता है। राज्यपाल ने कहा कि 'जैन दर्शन और साहित्य की पर्यावरण–चेतना' विषय पर गंभीरता से शोध होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज पर्यावरण संतुलन पूरी दुनियाँ के लिए चिन्ता का विषय बना हुआ है। ऐसे समय में भगवान महावीर एवं जैन साहित्य के संदेश मनुष्य में पर्यावरण–चेतना विकसित करने की दृष्टि से परम प्रेरणादायी सिद्ध होंगे।

राज्यपाल ने कहा कि जैन समाज एवं जैन साधक–संत वैशाली में भगवान महावीर की स्मृति में संचालित 'प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान' के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए काफी बढ़–चढ़कर सहयोग कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस संस्थान का विकास केवल सरकारी सहयोग पर ही निर्भर नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जैन–समाज के समृद्ध तथा भगवान महावीर में अटूट आस्था रखनेवाले कई श्रद्धालु इस संस्थान के सुदृढ़ीकरण हेतु अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं, बशर्त्ते उन्हें लगे कि यह संस्थान अपनी जीवंतता और सक्रियता से जैन साहित्य और उसके संदेशों को जन–जन तक पहुँचाने में अपनी तत्परता दिखा रहा है। राज्यपाल ने कहा कि आवश्यकता है कि संस्थान अपने पूरे एक वर्ष का 'कैलेण्डर ऑफ इवेंट्स' तैयार करे और उसमें जैन धर्म और साहित्य से जुड़े संतों, विद्वानों और श्रद्धालुओं को आमंत्रित करे। ऐसे अवसरों का उपयोग संस्थान के विकास की रूपरेखा तैयार करने के लिए भी हो सकता है।

आगे पृष्ठ...2 पर

राज्यपाल ने कहा कि आगामी बरसात के मौसम में संस्थान में वन विभाग से समन्वय बनाते हुए काफी संख्या में वृक्षारोपण करते हुए 'वन महोत्सव' का आयोजन होना चाहिए।

बैठक में अपर मुख्य सचिव श्री आर॰के॰ महाजन ने कहा कि संस्थान की घेराबंदी के लिए चारदीवारी निर्माण हेतु संस्थान को शीघ्र ही राशि आबंटित कर दी जाएगी तथा संस्थान के पुस्तकालय के सुदृढ़ीकरण के लिए भी शीघ्र 10 ए॰सी॰ उपकरण लगवाने के लिए भी निधि आबंटित हो जाएगी।

बैठक में यह निर्णय हुआ कि संस्थान एवं उसके निकटवर्त्ती क्षेत्र में 5000 वृक्षारोपण कराये जाएँगे तथा पौधों के संरक्षणादि के लिए 'मनरेगा' आदि योजनाओं के तहत प्रयास किए जाएँगे।

बैठक में यह भी निर्णय हुआ कि संस्थान के पुस्तकालय की दुर्लभ पांडुलिपियों के संरक्षण हेतु विशेष व्यवस्था होगी तथा महत्वपूर्ण पुस्तकों के डिजिटीकरण का काम पूरा कराया जाएगा। संस्थान की रिक्तियों को भरने के लिए बिहार लोक सेवा आयोग एवं बिहार कर्मचारी चयन आयोग को अधियाचना भेजे जाने का भी निर्णय लिया गया।

महामहिम राज्यपाल श्री टंडन ने संस्थान में वर्तमान में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या मात्र 04 (चार) होने पर भी आश्चर्य व्यक्त किया एवं कहा कि संस्थान में पढ़ाये जानेवाले विषयों के प्रति छात्रों में अभिरूचि जगाना जरूरी है तथा पाठ्यक्रम को रोजगारोन्मुखी किया जाना भी आवश्यक है। राज्यपाल ने कहा कि स्नातकोत्तर, स्नातक एवं शोध–छात्रों में रूचि जगाकर संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों को विकसित किया जाना चाहिए तथा इसे 'Centre of Excellence' के रूप में विकसित करने हेतु 'ब्लू प्रिंट' बनना चाहिए।

राज्यपाल ने तिरहुत के प्रमंडलीय आयुक्त को संस्थान का सतत अनुश्रवण करते रहने को कहा तथा निदेश दिया कि बी॰आर॰ए॰ बिहार विश्वविद्यालय एवं कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपतियों के साथ समन्वय बनाकर संस्थान के लिए उपयोगी और आधुनिक पाठ्यक्रम तैयार होना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि जैन धर्म–दर्शन के महत्वपूर्ण स्थल के रूप में वैशाली एवं अन्य संबंधित स्थलों का तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिए ताकि आमजन वैशाली की महत्ता के बारे में सविस्तार अवगत हो सकें।

बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह, तिरहुत के प्रमंडलीय आयुक्त श्री नर्मदेश्वर लाल, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान,वैशाली के निदेशक–सह–सदस्य सचिव श्री ऋषभचन्द्र जैन आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। धन्यवाद–ज्ञापन राज्यपाल के अपर सचिव श्री विजय कुमार ने किया।

.....